UGC NET Paper=2.... Sanskrit

Filler Form

YouTube

🎯JRF का जलवा 🔥🏆

दर्शन - साहित्य का विशिष्ट अध्ययन

UNIT=4

Daily = 6 pm

Class-32

By=NIDHU CHAUDHARY

B.A., M.A., P.G.D.C.A., now Ph.d running

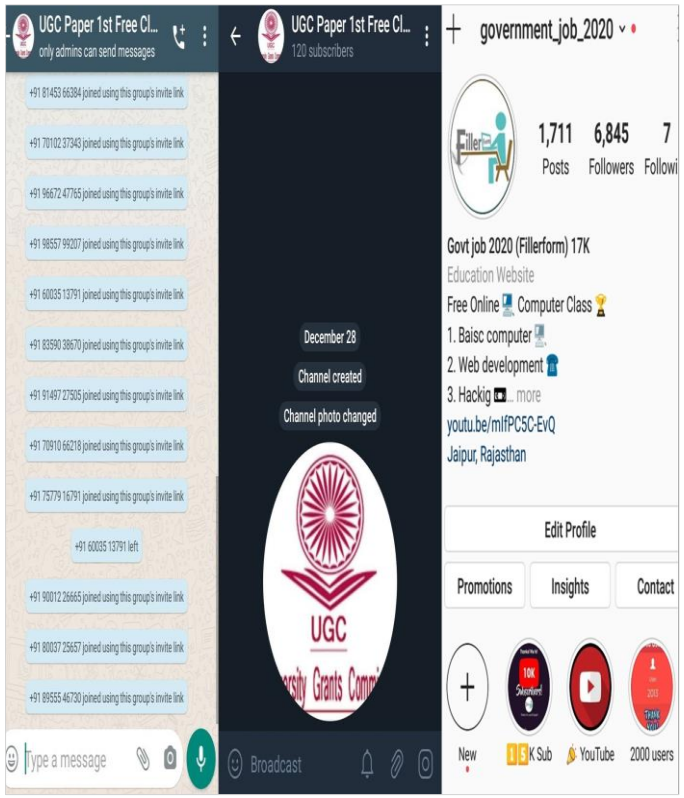
UGC Paper 1st Free Cl...
only admins can send messages
UGC Paper 1st Free Cl...
120 subscribers
government_job_2020
1,711 Posts
6,845 Followers
Govt job 2020 (Fillerform) 17K
Education Website
Free Online Computer Class
1. Baisc computer
2. Web development
3. Hackig ... more
youtu.be/mIfPC5C-EvQ
Jaipur, Rajasthan
Edit Profile
Promotions
Insights
Contact
December 28
Channel created
Channel photo changed
Type a message
Broadcast
New
K Sub
YouTube
2000 users

Filler Form
UGC NET 100%
Off Free Class
Free Notes
Live Class
100% OFF
5000+MCQ+PYQ
Free Books
Quizzes
Notes
Sample Papers
fillerform

8209837844
NET Free Class
www.ugc-net.com
09:00 AM- GK Class
11:00 AM- Paper 1st
12:00 PM - Hindi 2nd
01:00 PM- History 2nd
02:00 PM- Paper 1st MCQ
03:00 PM- Commerce 2nd
06:00 PM- Sanskrit 2nd
08:00 PM - Computer 2nd
09:00 PM- Paper 1st DI
Fillerform

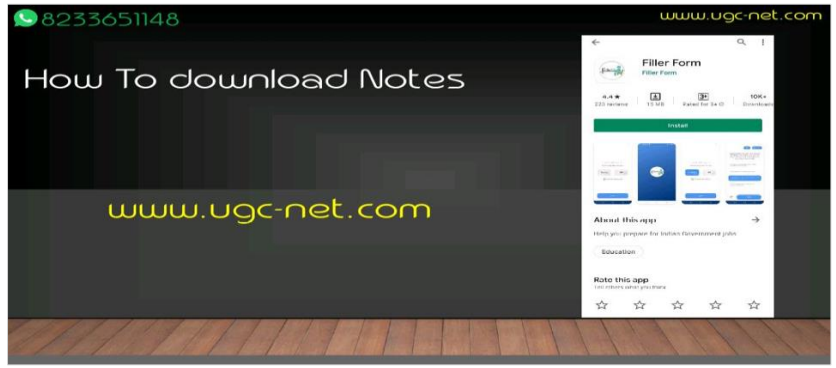
8233651148
www.ugc-net.com
How To download Notes
www.ugc-net.com
Filler Form

UGC Paper 1st Free Cl...
only admins can send messages

+91 81453 66384 joined using this group's invite link

+91 70102 37343 joined using this group's invite link

+91 96672 47765 joined using this group's invite link

+91 98557 99207 joined using this group's invite link

+91 60035 13791 joined using this group's invite link

+91 83590 38670 joined using this group's invite link

+91 91497 27505 joined using this group's invite link

+91 70910 66218 joined using this group's invite link

+91 75779 16791 joined using this group's invite link

+91 60035 13791 left

+91 90012 26665 joined using this group's invite link

+91 80037 25657 joined using this group's invite link

+91 89555 46730 joined using this group's invite link

Type a message

UGC Paper 1st Free Cl...
120 subscribers

December 28

Channel created

Channel photo changed

Broadcast

government_job_2020

1,711 Posts

6,845 Followers

7 Followi

Govt job 2020 (Fillerform) 17K

Education Website

Free Online Computer Class

1. Baisc computer

2. Web development

3. Hackig ... more

youtu.be/mIfPC5C-EvQ

Jaipur, Rajasthan

Edit Profile

Promotions | Insights | Contact

New

15K Sub

YouTube

2000 users

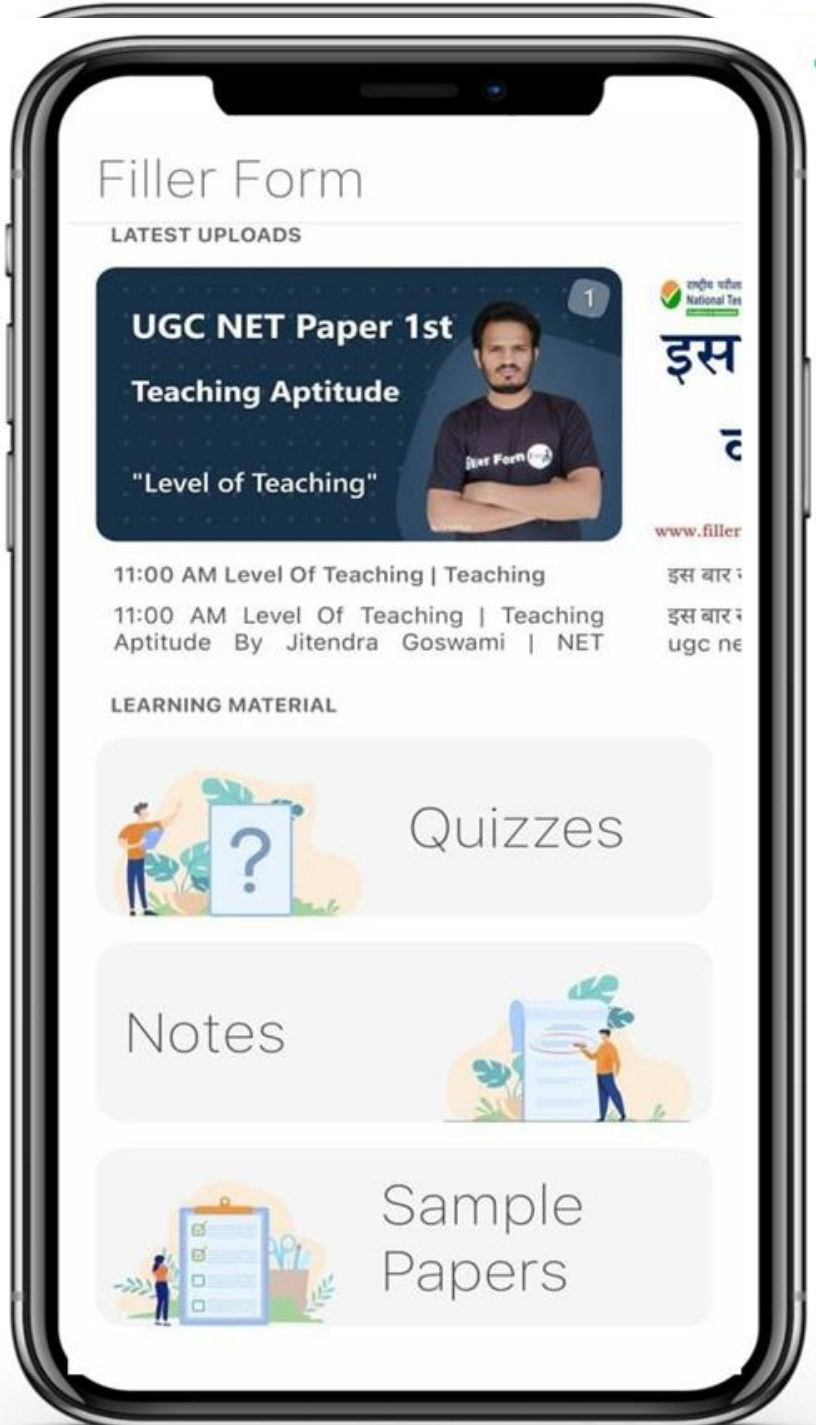

UGC NET 100% Off Free Class

Free Notes

Live Class

100% OFF

5000+MCQ+PYQ

Free Books

fillerform

8209837844

www.ugc-net.com

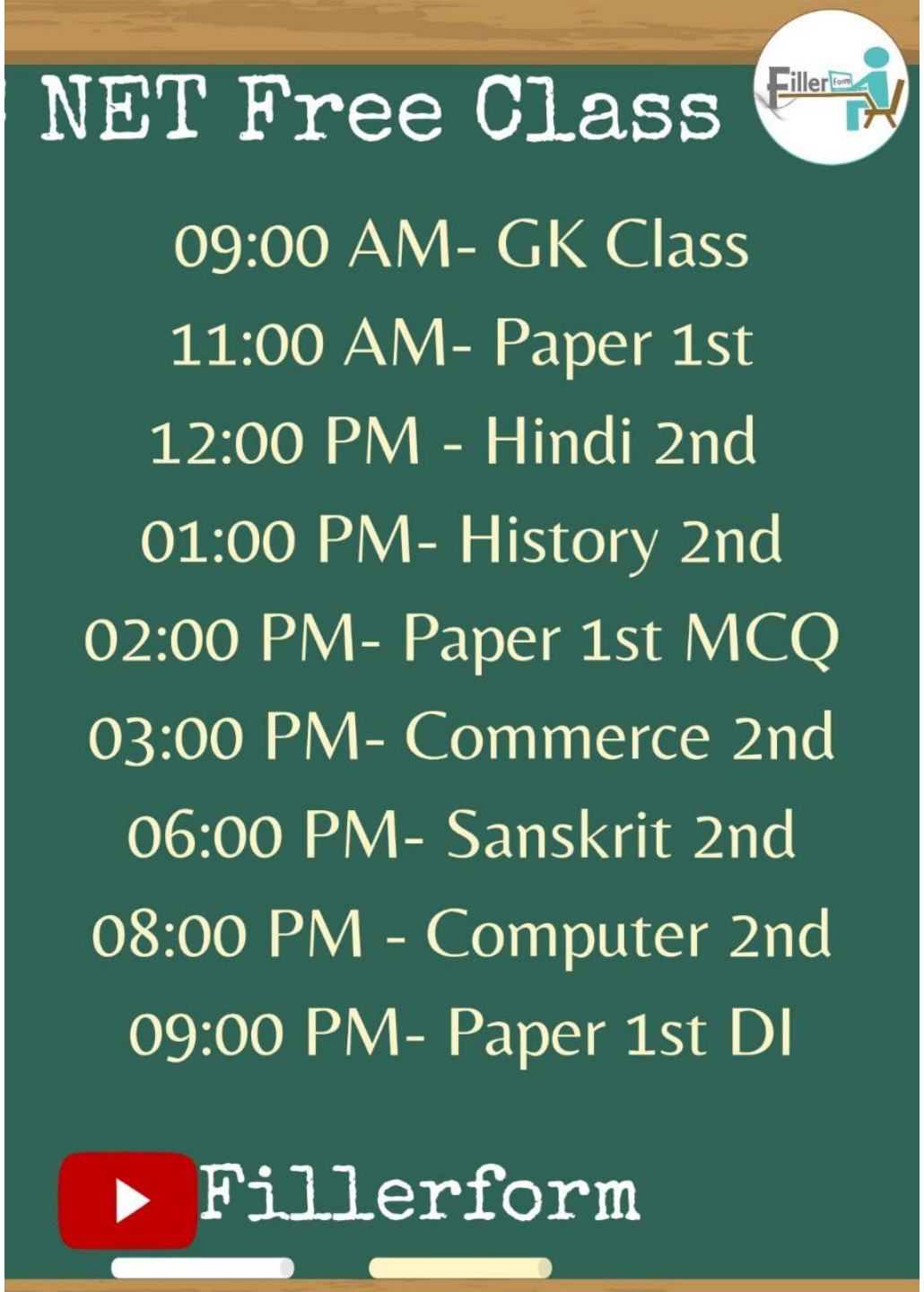

8233651148

www.ugc-net.com

How To download Notes

www.ugc-net.com

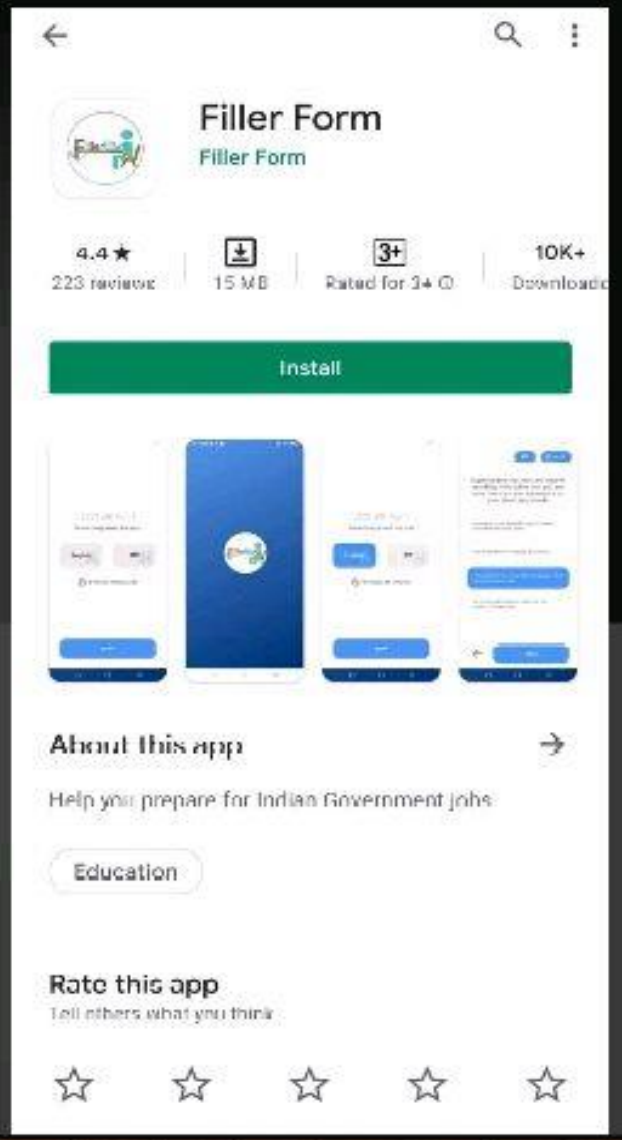

Home work Answer.....

3. तर्कसङ्ग्रहानुसारं कति गुणाः सन्ति -

(A) सप्तदश (B) अष्टचत्वारिंशत्

(C) चतुर्विंशतिः (D) दश

4. उत्क्षेपणं कस्य प्रकारः -

(A) गमनस्य (B) भ्रमणस्य

(C) कर्मणः (D) करणस्य

8209837844

www.ugc-net.com

Today's Topic...

।। प्रत्यक्षखण्ड ।।

8209837844 www.ugc-net.com

॥प्रत्यक्षखण्ड॥

प्रत्यक्षम्-

'तत्र प्रत्यक्षज्ञानकरणं प्रत्यक्षम्' । 'इन्द्रियार्थसंनिकर्षजन्यं ज्ञानं प्रत्यक्षम्'। तद्विविधं निर्विकल्पकं सविकल्पकं चेति । अर्थ- प्रत्यक्ष ज्ञान का जो असाधारण कारण है उसे प्रत्यक्ष (करण) कहते है । इन्द्रिय और पदार्थ के सन्निकर्ष (सम्बन्ध) से उत्पन्न ज्ञान को प्रत्यक्ष (प्रमा) कहते है। वह प्रत्यक्ष ज्ञान निर्विकल्पक और सविकल्पक के भेद से दो प्रकार का होता है ।

8209837844 www.ugc-net.com

1. निर्विकल्पकम्-

'तत्र निष्प्रकारकं ज्ञानं निर्विकल्पकम्' । **यथा-** 'इदं किञ्चित्' ।

अर्थ- उसमें प्रकारता अर्थात् विशेषण से शून्य ज्ञान को निर्विकल्पक ज्ञान कहते है। **जैसे-** यह कुछ है यह सामान्य ज्ञान होता है ।

2. सविकल्पकम्-

'सप्रकारकं ज्ञानं सविकल्पकम्' । **यथा-** 'डित्थोऽयं ब्राह्मणोऽयं श्यामोऽयं पाचकोऽयमिति' ।

अर्थ- नाम और जाति आदि विशेषण और विशेष्य के सम्बन्ध से युक्त (प्रकारता से युक्त) ज्ञान को सविकल्पक कहते है। **जैसे-** यह डित्थ है, यह ब्राह्मण है, यह पाचक है ।

8209837844 www.ugc-net.com

इन्द्रियार्थसन्निकर्ष-

'प्रत्यक्षज्ञानहेतुरिन्द्रियार्थसंनिकर्षः षड्विधः' ।

अर्थ- प्रत्यक्ष ज्ञान के हेतु इन्द्रिय और पदार्थ के संनिकर्ष (सम्बन्ध) निम्नोक्त छह प्रकार के है।

1. संयोगः 2. संयुक्तसमवायः 3. संयुक्तसमवेतसमवायः
4. समवायः 5. समवेतसमवायः 6. विशेषणविशेष्यभावश्चेति

1. संयोगः-

'चक्षुषा घटप्रत्यक्षजनने संयोगः संनिकर्षः' ।

8209837844 www.ugc-net.com

अर्थ- चक्षु-इन्द्रिय से घट आदि द्रव्य के प्रत्यक्ष ज्ञान में संयोग नामक सन्निकर्ष (सम्बन्ध) होता है ।

2. संयुक्तसमवायः-

'घटरूपप्रत्यक्षजनने संयुक्तसमवायः संनिकर्षः' । चक्षुः संयुक्ते घटे रूपस्य समवायात् ।

अर्थ- चक्षु-इन्द्रिय से घट शुक्ल, नील आदि रुप का प्रत्यक्ष होने में **संयुक्तसमवायः** नामक सन्निकर्ष (सम्बन्ध) होता है। क्योंकि चक्षु-इन्द्रिय से संयुक्त घटद्रव्य में रुप नामक गुण समवायसम्बन्ध से रहता है ।

8209837844 www.ugc-net.com

3. संयुक्तसमवेतसमवायः-

'रूपत्वसामान्यप्रत्यक्षे संयुक्तसमवेतसमवायः संनिकर्षः' । चक्षुः संयुक्ते घटे रूपं समवेतं तत्र रूपत्वस्य समवायात् ।

अर्थ- चक्षु से रुपत्व जाति के प्रत्यक्ष में संयुक्तसमवेतसमवाय नामक संनिकर्ष माना जाता है । चक्षु-इन्द्रिय से संयुक्त (संयोगसम्बन्ध से वर्तमान) घटद्रव्य में रुप (गुण) समवेत (समवाय सम्बन्ध से वर्तमान) है, उस रुप में रुपत्व जाति समवायसम्बन्ध से रहती है ।

8209837844 www.ugc-net.com

4. समवायः-

'श्रोत्रेण शब्दसाक्षात्कारे समवायः संनिकर्षः' । कर्णविवरवर्त्याकाशस्य श्रोत्रत्वात् शब्दस्याकाशगुणत्वाद्गुणगुणिनोश्च समवायात् ।

अर्थ- श्रोत्रेन्द्रिय से शब्द नामक गुण का प्रत्यक्ष होने पर समवाय नामक संनिकर्ष होता है । कर्णविवर में रहने वाला आकाश श्रोत्र है और आकाश का गुण केवल शब्द है और गुणी में गुण समवाय सम्बन्ध से रहता है ।

8209837844 www.ugc-net.com

5. समवेतसमवायः-

'शब्दत्वसाक्षात्कारे समवेतसमवायः संनिकर्षः' । श्रोत्रसमवेते शब्दे शब्दत्वस्य समवायात् ।

अर्थ- श्रोत्रेन्द्रिय से शब्दत्व जाति के प्रत्यक्ष में समवेतसमवाय नामक संनिकर्ष होता है । श्रोत्रेन्द्रिय से समवेत (समवाय सम्बन्ध से वर्तमान) शब्द में शब्दत्व जाति समवायसम्बन्ध से रहती है ।

8209837844 www.ugc-net.com

6. विशेषणविशेष्यभावः-

'अभावप्रत्यक्षे विशेषणविशेष्यभावः संनिकर्षः' । घटाभाववद्भूतलमित्यत्र चक्षुः संयुक्ते भूतले घटाभावस्य विशेषणत्वात् ।

अर्थ- अभाव के प्रत्यक्ष ज्ञान विशेषणविशेष्यभाव संनिकर्ष होता है। घटाभाव वाला भूतल है इस ज्ञान मे चक्षु इन्द्रिय से संयुक्त भूतल (विशेष्य) और घटाभाव (विशेषण) है।

8209837844 www.ugc-net.com

एवं संनिकर्षषड्कजन्यं ज्ञानं प्रत्यक्षं तत्करणमिन्द्रियं तस्मातिन्द्रियं प्रत्यक्षप्रमाणमिति सिद्धम् ॥

अर्थ- इस प्रकार पहले कहे गये संयोग आदि छह सन्निकर्षों से उत्पन्न ज्ञान को प्रत्यक्ष कहते है। इस ज्ञान के करण अर्थात् **'असाधारणकरण'** को **'इन्द्रिय'** कहते हैं। अत एव इन्द्रिय ही प्रत्यक्ष प्रमाण है यह सिद्ध होता है ।

Next class....

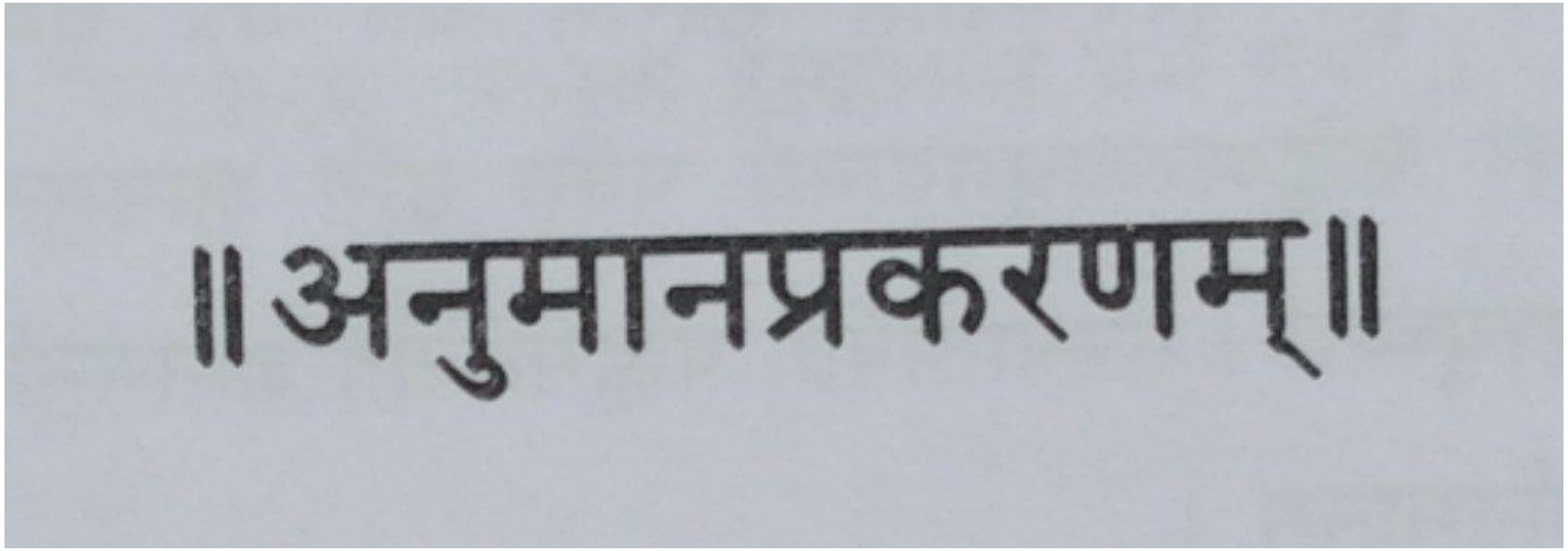

Home work Question....

5. गन्धवत्त्वं कस्य लक्षणम् -

(A) पृथिव्याः (B) दिशः

(C) जलस्य (D) वायोः

6. उपमितिकरणं किम् ?

(A) इन्द्रियम् (B) पदज्ञानम्

FEEDBACK

- आपको ये क्लास कैसा लगा ??

📝Comment box में अपना comment कर के Next Class में आपका solution पाए 📑 📝

For More Information....

www.ugc-net.com

/Fillerform

/Fillerform

/Fillerform

info@fillerform.com

8209837844

जिसने भी खुद को खर्च किया है,
DUNIYA ने उसी को GOOGLE पर SEARCH किया है।।
www.fillerform.com
fillerform
2

THANK YOU